मेष -- मेष राशि, के जातक जंहा सांसारिक और भौतिक सुखों को चाहने वाले होते हैं । वंही मौलिक पवित्रता को पाने की भी इनकी ईच्छा अति तीव्र होती हैं । जीवन के उतार चढ़ाव से जंहा ये प्रभावित होते हैं वंही ये धर्म और मोक्ष की गरिमा को भी बनाये रखना चाहते हैं । इनका जन्म धर्म के तेजस और मोक्ष के ओज को बनाये रखने के लिये हुआ हैं । परन्तु ये जीवन की प्रतियोगिताओं और चुनौतियों से भी नही घबराते हैं । इन दोनो में ही समन्वय बनाये रखने से इनका जीवन प्रभावित होता रहता हैं । दरअसल मेष राशि के जातक ऐक ऐसे अज्ञात केन्द्र बिन्दु की तरह होते हैं जंहा से कर्मयोग अर्थात जीवन के सांसारिक, भौतिक सुखों और धर्म योग अथार्त मोक्ष के प्रयासों की विभिन्न शक्तियॉ विकेन्द्रित होती हैं । ऐसे में कुण्डली में जिस जातक पर जैसे ग्रहों का प्रभाव होगा वो जातक उसी मार्ग पर चलने लगता हैं । हालाकि ये सदा ही सांसारिक और भौतिक सुखों से स्वंय को मुक्त करने का प्रयास करते दिखेगें । अपने इसी अंतर्मन के द्वंद के चलते ये लोग सदा ही अप्रचलित रिति रिवाजों पर चलने का प्रयास करते हैं और सामाजिक निंदा का शिकार होते हैं । बहरहाल ये लोग उसकी अधिक पर्वाह भी नही करते हैं और जो ईन्हे अच्छा लगता हैं वही करने का प्रयास करते है। ये राशिचक्र की पहली राशि हैं, हालांकि इसका स्वामी मंगल हैं परन्तु सूर्य भी इस राशि में जब आता हैं तो उच्च का हो जाता हैं अर्थात् यह राशि उच्चता की राशि हैं। जिन जातकों की मेष राशि होती है उनमे यह गुण सहज ही देखा जा सकता हैं, मेष राशि वाले जातक अक्सर उच्चता की बातें करते हैं तथा स्वयं कों हीन समझना इनके लिये पाप जैसा होता हैं ।

कालपुरूष की गणना के अनुसार भी यह राशि मनुष्य के सिर स्थान में निवास करती हैं और सिर भी मनुष्य के शीर्ष का द्योतक हैं। यह राशि क्षत्रिय जाति की है और जिन ग्रहों से यह प्रभावित होती हैं जैसे मंगल जो इसका स्वामी है, जैसे सूर्य जो इस राशि में आकर उच्चता को प्राप्त करता है ये ग्रह भी क्षत्रिय जाति के हैं अर्थात् क्षत्रियता का गुण भी इस राशि में प्रचुर मात्रा में होता है इससे इस राशि में बल, पराक्रम और अग्रणी रहने का स्वाभिमान होता हैं।

मेष राशि के जातक अक्सर अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिये प्रयास करते दिखेगें, बल का इस्तेमाल करने से ये नही चूकते क्योंकि पराक्रम इनमे बहुत होता हैं। परन्तु प्रेम और सुन्दरता के प्रति इनका रूझान भी बहुत होता है, अपनी क्षत्रियता सुलभ शुष्कता के कारण ये इन कोमल भावनाओं से रहित होते हैं। इसलिये चतुर लोग अक्सर इनकी इस कमजोरी का लाभ ले लेते हैं । मेष राशि के जातक प्रेम और स्नेह से इतने भावनात्मक हो जाते हैं कि अपनी हानि की परवाह भी नही करते परन्तु स्वाभिमान की रक्षा फिर भी ये किसी क्षत्रिय की तरह ही करते हैं।

मेष राशि वाले जातक मंगल ग्रह से प्रभावित रहते हैं और मंगल एक तर्कशील ग्रह हैं । जो ये सोचते हैं उसे तीव्रता से कर डालना चाहते हैं इस तरह मेष राशि के जातक तर्क करने वाले और वाद विवाद में फंसने वाले होते हैं । बदलते समय के साथ और तीव्रगामी जीवन में जब ये बहुत कुछ बोल जाते हैं और वाद विवाद में फंस जाते हैं तो अक्सर तनाव में रहते हैं जिससे ये ज्यादा खाने लगते हैं और बेवजह अपना वजन बढ़ा लेते हैं । ईन्हे तनाव से बचना चाहिये और अपने खानपान पर भी ध्यान देना चाहिये । कालपुरुष के अनुसार मेष राशि का निवास स्थान सिर हैं और इनके किसी भी कार्य का प्रभाव इनके सिर पर पड़ता हैं । जिससे ये तनाव में रहने लगते हैं । खाने में ये सब कुछ खा लेते हैं परन्तु विशेषयता हरी सब्जियॉ, मछली, मांस और भूने आलू पंसद करते हैं । शराब के आदि मेष राशि के जातक अक्सर ज्यादा और छककर शराब पी लेते हैं और बाद में हैंग ओवर के शिकार होते हैं और सिरदर्द की शिकायत करते दिखते हैं । ये अपने अंदर सहनशीलता को उत्पन्न करें और सहज रहने का प्रयास करें तो वाद-विवाद से बचेगें ही परन्तु उन्नति में आने वाले रोड़े भी ईन्हे परेशान नही करेगें ।

अग्नि तत्व की अधिकता के कारण इस राशि के जातक पित्त की समस्या और पेट की तकलीफो से ग्रस्त होंते हैं । इस राशि के जातको को ध ातु, रत्न और भूमि से विशेष स्नेह होता हैं। यह राशि चर राशि हैं अर्थात निंरतर उन्नति की दिशा में अग्रसर रहने वाली राशि, इस राशि के जातक वैसे तो बहुत महत्त्वाकॉक्षी होते हैं और शक्ति संचालन के क्षेत्र में कार्य करनें को प्राथमिकता देते हैं। अगर कुण्डली में शुभ योग हो तो ये जातक शक्ति संचालन के क्षेत्र में विशेष सफलता अर्जित करते हैं । ईन्हे अपनी कुण्डली को ध्यान से देखना चाहिये अथवा किसी योग्य ज्योतिषि को दिखाना चाहिये अगर इनकी कुण्डली में सूर्य, कर्क और मीन राशि में हो तो ईन्हे सूर्य रत्न माणिक धारण करना चाहिये जिससे इनकी उन्नति और पद वृध्दि में शुभ फल प्रकट होंगें ।

मेरा अनुभव :- राशि अगर लग्न में हो तो उसकी गणना शारिरिक बनावट अथवा स्वास्थ संबंधी घटबढ़ के लिये करनी चाहिये । परन्तु अगर राशि चन्द्र राशि बन जाये अर्थात नाम वाली राशि बन जाये अथवा चन्द्र उस राशि में हो तो फिर उससे व्यवहारिकता और दुनियॉदारी की गणना करनी चाहिये । इसलिये कि चन्द्र, कुण्डली की ऊपजाउ शक्ति हैं । जिस राशि में होगा उस राशि के अनुसार व्यक्ति की व्यवहारिकता और दुनियॉदारी की समझ को बनायेगा । उसी प्रकार से व्यक्ति की ऊपजाउ शक्ति होगी अर्थात व्यक्ति उसी प्रकार से सृजन और अर्जन करेगा ।

वृषभ --- वृषभ राशि का गहन अर्थ सृजनात्मक हैं । रचनात्मक व्यवस्था हैं । वैसे इसका शाब्दिक अर्थ हैं -- हट्टा कट्टा आदमी, नैतिकता, कामदेव, मंदिर का एक विशेष आकार, चन्द्रमॉ का एक घोड़ा और स्कंद का एक अनुचर । इन सबमें जो गुणधर्म हैं वही गुणधर्म इस राशि में भी हैं । जैसे इस राशि के चित्र सॉड में जो प्रजनन क्षमता की गोपनीय शक्ति होती हैं । वैसे ही वृषभ राशि के जातकों मे भी कई गुप्त शक्तियॉ होती हैं जो समय आने पर ये प्रकट भी करते हैं ।

वृषभ राशि, शौक, मेहनत, आकर्षण, धन और भोग की राशि इसका स्वामी शुक्र हैं, और इसका चिन्ह वृष अर्थात बैल कौन नही जानता कि बैल मेहनत का पर्याय हैं और शुक्र, धन, शौक, आकर्षण और भोग का । इसके जातक कई गुप्त शक्यिों के मालिक होते हुऐ भी इससे अंजान रहते हैं और ये राशि उन्हे आधुनिकता के रंग में रंगती चलती हैं । परन्तु जैसे ही गुप्त शक्यिों के ईस्तेमाल का समय आता हैं तो ये उसे ईस्तेमाल करने से चूकते भी नही हैं ।

इस राशि में वो सबकुछ हैं जो आजकल के तीव्रगामी जीवन में आवश्यक हैं। वृषभ राशि के जातक मेहनती और आकर्षक होते हैं, कभी कभी ग्रहों के प्रभाव से इनका प्रत्यक्ष आकर्षण भले ही दिखाई ना दे परन्तु इनके हावभाव से आप इनका अप्रत्यक्ष आकर्षण महसूस कर सकते हैं । इस राशि का स्वामी शुक्र होने से इस राशि के जातक सभी तरह के शौक और भोग से आकर्षित होते हैं और व्यवहारिक भी बहुत होते हैं। इस राशि की महिला जातक विशेष सुन्दर और आकर्षक होती हैं क्योंकि यह राशि स्त्री राशि हैं जो स्त्री जातकों पर विशेष कृपालु होती हैं। कालपुरूष की गणनानुसार यह राशि मनुष्य के मुख में वास करती हैं इसलिये भी यह राशि सुन्दरता की राशि हैं । साधारणयता मनुष्य की सुन्दरता उसके मुख और मुख के हाव भाव से ही ऑकी जाती हैं,और प्राकृतिक सुन्दरता तो इसका विशेष आकर्षण हैं,वन, पर्वत, शिखर और गौशाला इस राशि जातकों के विचरण के प्रिय स्थान हैं। वैश्य वर्ण होने से इस राशि के जातक सफल व्यापारी बन सकते हैं, इस राशि की महिला जातक अगर ब्युटी पॉर्लर के कार्य करें तो सुन्दरता कों विभिन्न आयाम प्रदान कर सकते हैं । वृषभ राशि के जातको का खाने से विशेष लगाव होता हैं । दिनभर में कई बार खाना और बहुत खाना इनके खाने के शौक में होता हैं । अगर विशेष ग्रह योग ना हो तो ये थुलथुल शरीर और बाहर निकले पेट वाले होते हैं । एसे भी इनकी राशि का स्वामी शुक्र हैं और शुक्र एंश आराम का प्रतिक हैं अथवा एसा कहें कि भौतिक सुखों का प्रतिक है। जिससे ये भौतिक सुख और एशं आराम में विश्वास रखने वाले होते हैं । शुक्र प्रेम का प्रतिक ग्रह भी हैं और वृषभ राशि के जातक अक्सर प्रेम में पड़ते देखे गये हैं हालाकि ये अलग बात हैं कि प्रेम में सफलता और असफलता उनकी कुण्डली के ग्रह योगों पर निर्भर करेगा । बहरहाल जो बात हैं वो ये हैं कि प्रेम पड़कर अक्सर ये खाने पर जाना पंसद करते हैं अथवा अपने प्रेमी को खाने पर बुलाते हैं । खाने में इनकी विशेष पंसद होती हैं और खाने के दौरान ये घी, मक्खन और रईसों जैसे खाने से अपनी उच्चता को प्रकट करना चाहते हैं । हालाकि अपने पारंपरिक खाने से इनका लगाव देखते ही बनता हैं और आधुनिक जमाने के लिहाज से इनको सलाद लेना चाहिये परन्तु ये खटटे फलों को ज्यादा पसंद करने वाले होते हैं । शॉत चित और स्थिर स्वभाव वाले वृषभ राशि के जातक अगर शराब की लत में पड़ जायें तो इनके लिये बहुत अशुभ होता हैं । फिर बात बात पर क्रोधित होना और हंसी मजाक पर भी नाराज होकर दिखाना इनका स्वभाव बनने लगता हैं । ईन्हे शरीर में पानी की मात्रा का विशेष ध्यान रखना चाहिये अगर शरीर में पानी की मात्रा अधिक हो जाये तो फिर ये बीमार पड़ने लगते हैं । इस राशि के जातक ध्यानपूर्वक देखे कि उनकी कुण्डली में अगर सूर्य, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ , इन राशियो में से किसी एक राशि में हो तो वृषभ राशि के जातक शनि रत्न नीलम धारण करें, ऐसे में नीलम इन जातकों की सफलता के लिये बहुत शुभ सिध्द होगा ।

मेरा अनुभव :- चन्द्र को हमारे ऋषि-मुनियों ने बहुत महत्व दिया हैं । ये पृथ्वी को अपने प्रभाव से बहुत प्रभावित करता हैं । समुन्द्र का ज्वार-भाटा चन्द्र से होता हैं, ये सब जानते हैं । समुन्द्र के पानी में जिस अनुपात में नमक होता हैं उतने ही अनुपात में हमारे शरीर के रक्त में भी नमक होता हैं । तो ज्वार-भाटा हमारे शरीर में भी चन्द्र की वजह से होता हैं । इसे समझना चाहें तो जब भी गोचर का चन्द्र आपकी राशि अथवा आपके लग्न से चतुर्थ से संचार करें तब अपनी भावनाओं को समझने का प्रयत्न करें आप चन्द्र के ज्वार-भाटे को समझ जायेगें ।

मिथुन ---मिथुन राशि के विषय में शास्त्रों में बताया गया हैं कि ब्रहमा ने स्वंय को स्वंयभू और शतरुपा के रुप में विभक्त कर इस राशि का निर्माण किया ताकि सृष्टि का सृजन हो सके । ये परस्पर आकर्षण की राशि हैं, आपने देखा होगा इसके चिन्ह में एक स्त्री और पुरूष परस्पर आकर्षण से बध ों विचरण करते नजर आते हैं, इसका स्वामी बुध हैं जो इसे प्रचुर बुध्दी और वाकशक्ति देता हैं ।

द्वंद और अस्थिरता मिथुन राशि का प्रमुख लक्षण हैं । संतोष, तुष्टि, धैर्य और स्थिरता इस राशि के जातकों में नही होता हैं । ये लोग सदा ही कुछ पाना चाहते हैं चाहे उसे पाना इनके बस में हो अथवा ना हो परन्तु निंरतर प्रयासशील रहना और द्वंद में रहना इनका स्वभाव होता हैं । ऐक मृगतृष्णा सदा ही इनमें व्याप्त रहती हैं और इसी मृग मरिचिका की तृष्णा में ये लोग सदा ही चंचल और अस्थिर बने रहते हैं ।

इसलिये मिथुन राशि के जातक विपरित लिंग के प्रति आकर्षित और बुध्दीमान तथा वाक्पटु होते हैं। यह पुरूष जाति की राशि हैं इसलिये पुरूषोचित गुणों से भरपूर है इसमें वायु तत्व की अधिकता होती है जिससे इसके जातक वायु रोगो से पीड़ीत हो सकते हैं । नृत्य, गायन, जुआ और विहार की निवासिनी यह राशि अपने जातकों कों उपरोक्त शौक देती हैं, उष्ण प्रकृति की ये राशि शारिरिक रूप में अपने जातकों कों कभी कभी रूक्ष त्वचा, रूक्ष रोम और रूक्ष वाणी प्रदान करती हैं ।

इससे इसकी विशेषताओं में काई अंतर नही आता, इसके जातक बुध्दीमान, तेजस्वी और संचार माध्यमों में विशेष रूचि लेते हैं, तथा जीवन में कभी ना कभी लेखन और संचार माध्यम से अवश्य जुडते हैं,इस राशि का वास गले और बॉहों पर होता हैं । अगर यह पाप ग्रहों से अधिक पीडीत हो जाये तों इसकी सारी विशेषताएं समाप्त हो जाती हैं तथा गले में रोग उत्पन्न होता हैं इसके विपरित अगर शुभ ग्रहों से प्रभावित हो तो वाणी को बहुत आकर्षक बना देती हैं ।

साधारणयता एसा देखा गया हैं कि मिथुन राशि के जातक कलाकार प्रवृति के होते हैं और खाने में भी इनकी ये प्रवृति दिखाई देती हैं । ये लोग खाने में अधिकता के बजाय विविधता को देखते हैं । मिथुन राशि का स्वामी बुध ग्रह हैं जिसे कुमार अवस्था का ग्रह माना जाता हैं और जैसे किसी कुमारावस्था वाले लड़के लड़की को सदा ही जल्दी होती हैं वैसे ही मिथुन राशि के जातक को भी सदा ही जल्दबाजी होती हैं और खाना भी शॉती से खाने के बजाय सदा हड़बड़ी में ही खाते हैं ।

ये लोग घर के खाने के बजाय बाहर का खाना पसंद करते हैं और मसालेदार खाना पसंद करते हैं । हालाकि ये लोग खाना कम खाते हैं परन्तु विविधता हो तो पेट भर लेने में हर्ज नही समझते हैं । शादी, पार्टी ईत्यादि में ये खाने के दौरान बातें करना पसंद करते हैं और अपनी कलापुर्ण बातों से लोगों का मनोरंजन करने से भी नही चूकते हैं ।

साधारणयता शराब से ये दूर ही रहते हैं अगर खानपान के ग्रहों पर पाप ग्रहों का प्रभाव ना हो तो ये शराब पीना पसंद नही करते हैं । सूखें फलों से इनका लगाव होता हैं और यही इनके लिये शुभ भी होता हैं । इससे इनके स्नायु प्रणाली पर उचित प्रभाव पड़ता हैं और इनकी कला निखरती हैं ।

कालपुरुष के अनुसार मिथुन राशि का निवास स्थान गला होता हैं और मिथुन राशि वाले जातक अगर अपने गले और श्वसन प्रक्रिया पर ध यान दें तो ईन्हे सर्दी जुकाम से बचने में आसानी होगी । अन्यथा इनके बाहर खाने का शौक और खाने की विविधता ईन्हे दमें और फेफडों के रोग भी दे सकती हैं ।

अपनी कला संबधी दिलचस्पी के कारण ये गायक बन सकते हैं तथा अति बुध्दीमान भी, साधारणयता ज्ञान विज्ञान और आधुनिकता वाली यह राशि मनुष्य को प्रथम सीढी से चलाकर उसके शीर्ष तक पहुचाती हैं । बहरहाल ये ध्यान से अपनी कुण्डली देखें और अगर सूर्य, कन्या और तुला राशि में स्थित हो तो ईन्हे शुक्र रत्न हीरा अथवा उपरत्न ओपल धारण करना चाहिये जो ईन्हे उन्नति तो देगा ही साथ साथ इनके स्वास्थ को भी निरंतर बनाये रखेगा ।

मेरा अनुभव :- राशि सदा ही व्यवहारिकता और दुनियॉदारी को दर्शाती हैं । इसकी गहराई को समझने के लिये ये अवश्य देखें कि राशि में चन्द्र कौन से नक्षत्र में हैं और नक्षत्र के किस चरण में हैं । इसलिये कि नक्षत्र, विषय का स्वामी हैं और उसका चरण नवांश हैं । अब अगर राशि, नक्षत्र और चरण के स्वामी बलवान हैं तो व्यक्ति व्यवहारिकता और दुनियॉदारी में पारगंत हैं । अन्यथा मन तो वंहा अटका हैं जंहा उनकी राशि, नक्षत्र और चरण हैं क्योंकि चन्द्र मन हैं । परन्तु व्यवहारिकता और दुनियॉदारी वैसी कर रहे हैं जिसमें उनका मन नही लगता । इसलिये कि राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी और चरण स्वामी से ज्यादा बलवान दूसरे ग्रह हैं । जिससे क्षेत्र, विषय और फल बदल गये ।

कल हम आपको कर्क राशि के विषय में बतायेगें । प्रतिक्षा करें ।

बहरहाल ---------- जारी । सुरेश भारद्वाज ।

कर्क --- कर्क राशि का प्रतिक चिन्ह कर्कट हैं जो पानी के अंदर भी रहता हैं और पानी के बाहर भी रह सकता हैं । यही स्वभाव कर्क राशि के जातकों का भी होता हैं । अर्थात जीवन की मुख्य धारा से हटकर ये लोग कुछ नवीन करने का प्रयास भी करते हैं और फिर अंर्तमुखी होकर पुनः उसी धारा में लौट आते हैं जंहा से कुछ हटकर करने का मन बनाया था । दोनो ही अवस्थाओं में ये स्वंय पर पुर्ण नियंत्रण बनाये रखते हैं ।

कर्क राशि के जातक उन्नति के लिये स्वंय को परिस्थियों के हवाले कर देते हैं और समय के अनुसार ढलने का प्रयत्न करते हैं । दरअसल ये लोग उन्नति के वाहन की तरह होते हैं । स्वंय तो उन्नति करते ही हैं साथ साथ दूसरों के लिये भी प्रेरणा का स्त्रोत बनते हैं ।

कर्क राशि अति बलवान और महारानी राशि हैं, चन्द्र इसका स्वामी हैं और चन्द्र कों ग्रह संसद में रानी का दर्जा हासिल हैं, इससे चन्द्र का आसन ये राशि स्वंत ही महारानी राशि बन जाती है । यह राशि श्री राम, श्रीकृष्ण और पंडीत जवाहरलाल नेहरू के लग्न में थी और इनकी प्रतिष्ठा और श्रेष्ठ जीवन से किसे इन्कार होगा इस राशि की विशेषता ये है कि इसे शुभ ग्रहों के प्रभाव की आवश्यकता नही होती यह राशि स्वंत ही बलवान होती हैं और बिगैर शुभ प्रभाव के भी अपना शुभ फल देती हैं अगर शुभ प्रभाव हो तो सोने पे सुहागा जैसा फल हो जाता है ।

यह राशि जल राशि हैं, जब यह क्रूर ग्रहो के प्रभाव से अति निर्बल होती है तो कफ, बुखार, टी बी और फेफडो में होने वाली बीमारियॉ देती हैं । शरीर में इसका स्थान भी फेफंडो में ही होता हैं, यह सम्पूर्ण रूप में छाती को प्रतिनिधित्व देती है। जल राशि होने से इसे जल अति प्रिय हैं और इसके जातक भी जल स्थानों में विचरण करना पंसद करते हैं इसके अलावा खेत, खलिहान, बावडी, तट और जॅहा देवस्त्री जैसे धार्मिक स्थान हो इसके जातक प्रसन्नता से वॅहा विचरण करते हैं, आजकल ये बाग, बगीचे और जलप्रपात जैसी चींजो में हम गिन सकते हैं, अर्थात् कर्क राशि के लोगों को ये सब अच्छा लगता हैं ।

कर्क राशि के जातक खाने के भी शौकीन होते हैं और अपने खानपान कों संतुलित नही रख पाते हैं । शराब के सेवन से तो ईन्हे दूर ही रहना चाहिये अन्यथा अपने स्वास्थ के बिगड़ने को ये रोक नही सकते । हालाकि कर्क जल प्रिय राशि है। इसलिये कर्क राशि के जातक शराब के सेवन के आदि देखे गये हैं । किन्ही विशेष ग्रह योगों से एसा ना हो तो बात दूसरी हैं ।

बहरहाल गरिष्ठ पदार्थ खाने के भी ये बहुत शौकीन देखे गये हैं । तले हुऐ, मसालेदार और भूने हुऐ खाने खाकर ये अपने पेट में जलन की शिकायत उत्पन्न कर लेते हैं । हालाकि साधारण खानपान और उच्च विचार इनकी निति होनी चाहिये जिससे ये कर्क राशि में उत्पन्न होने को सार्थक कर सकें । मांसाहारी जातक अगर मछली और पानी में उत्पन्न जीवों से परहेज रखें तो कुछ बेहतर हो सकता हैं । इसके अलावा रेशेदार फल और फल्लीयों वाली सब्जियॉ इनके स्वास्थ को बेहतर बनाये रख सकती हैं । यह चर राशि है अर्थात् निंरतर उन्नति करना इसके स्वभाव में हैं इसलिये इसके जातक निंरतर आगे बढने में विश्वास रखते हैं पीछे हटना इन्हे दुखी कर देता है। बहरहाल कर्क राशि के जातक स्वनिर्मित और रचनात्मक कार्य करने वाले होते हैं । आप ध्यान से अपनी कुण्डली देखे अगर सूर्य, मेष, सिहं, वृश्चिक, धनु अथवा मीन राशि में हैं तेा आप मंगल रत्न मूंगा धारण करें, यह रत्न आपकी सफलता में चार चॉद लगाने का कार्य करेगा ।

मेरा अनुभव :- जन्म लग्न, जीवन रुपी वृक्ष हैं और सूर्य लग्न इस वृक्ष का मूल हैं और अतिमहत्वपूर्ण बात कि चन्द्र लग्न अर्थात राशि इस वृक्ष की ऊपजाउ शक्ति हैं । इसी का नाम बहुचर्चित सुदर्शन-चक्र सिध्दांत हैं । राशि का बलवान होना आपको जीवन जीने की समझ देता हैं । आपका जीवन रुपी वृक्ष कितना निखरेगा, ये आपकी राशि की बलवता पर निर्भर करेगा । भले ही आपकी कुण्डली में दूसरे कई ग्रह बलवान होगें और आपमें उनसे संबंधित कलायें होगी परन्तु फिर भी अगर राशि बलवान नही हो तो बुध्दीमान और कलाकार को भी दुनियॉ और व्यवहारिकता की समझ कम होगी । ये बात एसी हैं कि बड़ा और लंबा चौड़ा वृक्ष भी हरा-भरा और फलप्रद नही होगा ।

सिंह --- सिंह राशि गुप्त रहस्यों से घिरी एसी राशि हैं जो स्वंय जड़ अवस्था में दिखती हैं । इस राशि के जातक सदा ही क्रियात्मक अभिप्रेरणा, उन्नति, बहुसंख्यक होने की लालसा और विस्तार करने की ईच्छा से भरे होते हैं । ये राशि प्रकृति के ऐसे समय को चिन्हित करती हैं जब प्रकृति इसके द्वारा भरपूर प्रजनन शक्ति से सृष्टि का विस्तार करना चाहती हैं । इसलिये इनमें संभोग की भी ऐक अलग और अदम्य ईच्छा रहती हैं ।

सिंह राशि के जातक सदा ही बेचैन परन्तु जीवन शक्ति से भरपूर और जीवन की नई दिशाओं को ढूढने के लिये उत्सुक तथा जो हैं उसमें से नवीन अर्थ तलाशने में लगे रहते हैं । ये लोग प्राचीन सभ्यताओं और परम्परागत मूल्यों के हिमायती होते हैं । कोई कितना भी निपुण क्यों ना हो परन्तु ये लोग उसे अपने सामने हीन ही समझते हैं । इसका कारण यही हैं कि इनमें हालाकि प्रकृति की प्रत्येक बात समझने की योग्यता होती हैं परन्तु जड़ राशि होने से ये अतर्मन की बात को प्रकट नही कर पाते हैं । इस तरह ये लोग समझते हैं कि जो ये जानते हैं वो कोई और नही जान सकता हैं ।

सिंह राशि अति बलवान और महाराजा राशि, सूर्य इस राशि का स्वामी हैं और सूर्य को ग्रह संसद में राजा की पदवी हासिल है, इसलिये स्वंत ही इसकी राशि राजा का आसान हो गयी और यह राशि भी कर्क राशि की तरह बलवान राशि मानी जाती है ।

इसे भी किसी ग्रह के शुभ प्रभाव की जरूरत नही होती, हो जाये तो सोने पे सुहागा बहरहाल क्योंकि इसका नामकंरण ही सिहं हैं और इसका चिन्ह भी सिंह है इसलिये इसके जातक सिंह की तरह शूरवीर, गर्जन करने वाले तथा खुले मुॅह के होते हैं अर्थात् जो भी हो मुॅह पर कह देते हैं दिल में रखना इनके स्वभाव में नही होता ।

यह राशि अग्नि तत्व की पुरूष राशि हैं इसलिये इस राशि में पुरूषार्थ बहुत होता हैं, यह दिनबली राशि हैं जिससे इसके जातक दिन के समय अधिक सक्रिय और क्रियाशील रहते हैं, इसके जातक अपने बनाये उसूलों और कानूनो पर चलना ज्यादा पंसद करते हैं, क्योकिं यह राजा राशि हैं इसलिये इसके जातक राजसिक विचारों के होते हैं और किसी भी क्षेत्र में मुख्य व्यक्ति के अलावा किसी और व्यक्ति से जुडना ये अपनी शान के खिलाफ समझते हैं ।

सिंह राशि के जातक राजा किस्म के जातक होते हैं । कई लोगों के साथ बैठकर खना पीना और अच्छे वाहनों में घूमना फिरना इरनके जीवन का हिस्सा होता हैं । हालाकि जैसा जिस जातक का जीपवन स्तर होगा वैसा ही वो जीवन जियेगा परन्तु दिल के बादशाहों जैसा जीवन जीना इनका लक्ष्य होता हैं ।

इनका खानपान अपने ही तरह का होता हैं ये लोग अधिकतर मांसाहारी देखे गये हैं । किन्ही विशेष ग्रह योग से एसा ना हो तो बात दूसरी हैं । बहरहाल ये लोग अगर फल और सब्जीयों के सेवन पर ध्यान दें तो तो इनके स्वभाव और आधुनिक जीवनशैली से तालमेल इनके लिये सहज हो जायेगा अन्यथा इनके सिंह की भॉति गर्जन से किसे इन्कार हैं ।

कालपुरुष के अनुसार सिंह राशि का स्थान हदय स्थान होता हैं । अगर ये लोग शराब से परहेज कर सके तो सदा ही हदय रोग से बच सकते हैं अन्यथा हदय में निवास करने वाली राशि कब तक हदय को शराब के हमले से बचा पायेगी ।

उष्ण प्रकृति का होने से और गर्जनशील प्रवृति होने से इसके जातक अक्सर अपयश के भागी होते हैं परन्तु इससे भी इनकी शान में कमी नही आती और अनेक क्रांतिकारी अविष्कार, विचार तथा धन, वैभव के गुणो से भरपूर यह राशि शक्ति संचालन करने की अदभूत कला से परिपूर्ण हैं और महामानवों को उत्पन्न करना इस राशि की विशेषता हैं ।

इसी राशि में उत्पन्न जातक क्रांति के अगुआ और संचालनकर्ता होते हैं । आप अपनी कुण्डली कों ध्यान से देखे अगर सूर्य, मेष, सिंह, वृश्चिक, धनु अथवा मीन राशि में हो तो आप मंगल रत्न मूंगा धारण करें ये रत्न आपकी सफलता में चार चॉद लगा देगा ।

मेरा अनुभव :- चन्द्र की ऊपजाउ शक्ति की इतनी प्रबलता हैं कि ये अगर लग्न में हो तो व्यक्ति के अंदर अत्याधिक व्यवहारिकता और दुनियाँदारी भर देता हैं । एसे व्यक्ति से काम निकालना आसान नही होगा । इससे चन्द्र का दुगुना प्रभाव प्रकट होता हैं क्योंकि चन्द्र अगर लग्न में होगा तो लग्न भी वही होगा और राशि भी वही होगी । जिससे चन्द्र अपनी दुगुनी व्यवहारिकता और दुनियाँदारी को प्रकट करेगा । एसा व्यक्ति एक से अधिक आय के साधन बना कर रखता हैं । चन्द्र के लग्न में होने से व्यक्ति धनवान तो होता ही हैं क्योंकि इससे -राजयोग- बनता हैं ।

कन्या राशि ऐक क्रियात्मकता भंडारण की राशि हैं । सृष्टि की क्रियात्मक शक्ति को ये अपने द्वारा प्रकट करती हैं । बहरहाल इसके बाद भी से अंसतोष से भरी रहती हैं । दरअसल ये निराश लोगों की राशि हैं हर तरह से सुख भोगने के बावजूद भी इस राशि के लोग संतोषी नही बन पाते हैं । सुख सम्पती और भोग विलास में लिपटे रहने पर भी इन लोगों को शॉती नही मिलती हैं ।

वैसे इसकी एक विशेषता ये भी हैं कि यही एक राशि हैं जिसका संकेत चिन्ह मानव आकृति से बना हैं । हालाकि मिथुन राशि का संकेत चिन्ह भी मानव आकृति का हैं परन्तु वो आकृति से अधिक मावनी संगम को दर्शाता हैं । कन्या राशि में भलाई और अनिष्ट करने की प्रबल शक्ति होती हैं । इसलिये हमारे ऋषि मुनियों ने इसके रहस्य अधिक प्रकट नही किये हैं । इस राशि में जन्म लिये लोग अपने उत्तरदायित्व को भरपूर ढंग से पुर्ण करने का प्रयास करते हैं परन्तु फिर भी दुखद जीवन ही जीने को बाध्य होते हैं ।

कन्या राशि के लोग ऐसे दुखभंजनकर्ता होते हैं जो आपातकाल में बहुत ही अच्छे सहयोगी सिध्द हो सकते हैं परन्तु ईन्हे अपनी गुप्त शक्तियो को पहचानना होगा और संवय को जीवन के भावनात्मक बंवडर से बचाना होगा । कन्या राशि, बुध की प्रिय और उच्च होने वाली राशि है, इसके द्विस्वभाव होने से इसमें दो प्रकार की विचार धाराओं का संगम रहता है। युध्द हो अथवा शॉती यह दोनो ही समय में अपना समन्वय बैठा सकती है, यह लचीली जीवनशैली को अपनाने वाली आधुनिक राशि है ।

इसके जातक द्विस्वभाव होने से अपने व्यवहार से कई बार उलझन पैदा कर देते हैं और साधारण जन इसके स्वभाव कों समझने में असमर्थ होते हैं । यह स्त्रीयेाचित गुणो से भरपूर स्त्री राशि हैं, जब यह किसी स्त्री की राशि होती हैं तब यह सहज ही उस स्त्री कों बहुत आकर्षक बना देती हैं और विपरित लिंगी सहज ही इसकी तरफ आकर्षित होते हैं । किन्ही विशेष ग्रह योगों के अलावा कन्या राशि के जातक खाने के प्रति अधिक लालायित नही रहते हैं । खाना ईन्हे पसंद होता हैं परन्तु इनकी अपनी शर्तों के हिसाब से और ये लोग अपनी पसंद का खाना खातें हैं जिसमें स्वास्थ के लिये विशेष लाभ होता हो । हम एसा कह सकते हैं कि ये लोग खानपान के प्रति सजग रहने वाले लोग हैं ।

सलाद और हरी सब्जीयॉ ये लोग चटकारे लेकर खाते हैं और शराब के विषय में सतर्क रहते हैं । वैसे शराब इनके लिये ठीक भी नही होती हैं परन्तु खानपान के ग्रहों पर अगर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो ये लोग शराब पीते भी देखे गये हैं । यह शीत प्रकृति की राशि हैं इसके जातक हरियाली, रति स्थान और चित्रशालाओं में बहुत प्रसन्नता अनुभव करते हैं। आने वाले वर्ष कन्या राशि के जातकों के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं आजकल इसके दशम स्थान में इसका मित्र ग्रह शनी संचार कर रहा है, जो इसके कार्यो कों स्थायित्व प्रदान करने में लगा हैं, इसलिये कन्या राशि के जातक आने वाले दस वर्षो में बहुत उन्नति करने वाले हैं ।

यह राशि पेट में किडनी स्थान में निवास करती हैं इसलिये जब कोई किडनी संबंधी रोग से त्रस्त होता हैं तो यह राशि इसके लिये जिम्मेदार होती क्योकिं ऐसे हालात में यह अशुभ ग्रहों से त्रस्त होती हैं। आप ध्यान से देखे कि आपकी कुण्डली में सूर्य, वृषभ, मिथुन, कन्या , तुला , मकर अथवा कुम्भ राशि में किसी एक राशि में हो तो आप बेहिचक शनी रत्न नीलम धारण करें, ये आपके कार्यो कों स्थायित्व और गहराई प्रदान करेगा ।

मेरा अनुभव :- चन्द्र जब किसी राशि में हो तो राशि अनुसार आपकी कार्यशैली को तय कर देता हैं । भले ही आप कोई भी कार्य करें परन्तु आपकी कार्यशैली उसी राशि अनुसार हो जाती हैं । जैसे चन्द्र अगर कन्या राशि में हैं तो मानव-आकृति से चिन्हित ये राशि मानव-सबंधों पर ध्यान केन्द्रित करवा देती हैं । फिर कन्या राशि के जातक कुछ भी करें परन्तु जबतक मानव-सबंधों को अपने हिसाब से परिभाषित ना कर ले तब तक उन्हे सफलता से सन्तुष्टि नही मिलती हैं । यही बात वो अपने कार्यक्षेत्र में प्रकट भी करते हैं । इस तरह आपकी राशि आपकी कार्यशैली को तय करती हैं और उसकी बलवता आपके जीवन के निखार को प्रकट करती हैं ।

तुला--- तुला राशि में अध्यात्मिकता और भौतिक रस का एसा मिश्रण होता हैं कि इसे इसके सतुंलन में ही इसके जातकों को जीवन पुर्ण करना पड़ता हैं । दो विरोधात्मक शक्तिों के बीच में सतुंलन बनाना सहज और आसान नही होता हैं और तुला राशि के जातकों को अपने जीवन में यही परिक्षा देनी होती हैं । इसी के चलते इन जातकों के अंतर्मन में अंसन्तुलन का एक ज्वालामुखी सा जलता रहता हैं परन्तु उपरी तौर पर ये शॉतंचित से बने रहते हैं । ये लोग अपने ज्ञान और असन्तुलन के अहसास को दूसरों पर क्रियान्वित होता देखना चाहते हैं परन्तु असन्तुलन तो आखिर असन्तुलन ही हैं जो अंतिम रुप में बना ही रहता हैं ।

तुला राशि, शुक्र ग्रह की प्रमुख और मूल त्रिकोण राशि तुला के जातक बहुत ही वणीक स्वभाव के और राजनितिक चातुर्य से भरपूर होते हैं । हालाकि इनका अपना जीवन बहुत असंतुलित और अस्थायि होता हैं अगर शनी का इस राशि पर प्रभाव ना हो तो। शनी ही इस राशि को स्थायि और सतुंलित कर सकता हैं इसलिये जब शनी इस राशि पर होता हैं तब वह अपने उच्च स्थान कों पाता हैं । इनके इस अस्थायि और असंतुलित जीवन का संकेत हमे इस राशि के चिन्ह से भी प्राप्त होता हैं, इस राशि का चिन्ह तुला हैं अर्थात् तराजू, आप देखे कि तराजू के दोनो पलडे कभी संतुलित नही होते।

यह राशि चर सज्ञंक हैं जोकि निंरतर उन्नति की ओर अग्रसर रहती है, इसके जातक भी निंरतर उन्नति ही चाहते हैं, पुरूष जाति और क्रूर स्वभाव के कारण यह राशि अपने लाभ की पहले सेाचती हैं इसके जातक भी इससे अछूते नही हैं । तुला राशि के जातक अक्सर आसपास के माहौल से बहुत प्रभावित होते हैं और इसमें परस्पर सहयोग भावना तलाशना इनके लिये प्राथमिकता होती हैं । इनके लिये खानपान इतना अहम नही होता जितना कि ये इस बात के लिये लालायित रहते हैं कि खाने का माहौल सुकून वाला हो । ये लोग खानपान से और स्वंय के रहन सहन से स्वंय को संतुलित करने का प्रयास करते हैं ।

ईन्हे लहसुन को अपने खाने में सम्मिलित रखना चाहिये ताकि ईन्हे धमनियों संबंधी रोग ना हो हालाकि ये लोग सलाद और मीठा खाना पसंद करते हैं । बहरहाल प्रत्येक चीज में उच्च कोटि को ये प्राथमिकता देते हैं । आरामदेह जीवन और बेहतरीन खाना इनकी पसंद हैं ।

तुला राशि के जातक अगर शराब के सेवन से परहेज कर सके तो इनके लिये बेहतर होगा अन्यथा अत्याधिक शराब के सेवन के लिये ये बदनाम होते हैं । शराब सेवन पर इनका नियंत्रण नही रहता हैं हालाकि ये शराब का सेवन अधिकतर साथ देने के लिये करते हैं ।

बहरहाल शरीर के संतुलन, किडनी और पाचन क्रिया का अगर ये ध्यान रखें तो इनके स्वास्थ पर बुरा प्रभाव नही पड़ेगा । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संतुलन बनाये रखना ही इनका मुख्य ध्येय होना चाहिये ।

हाठ, बाजार और सौदेबाजी के स्थान इसके प्रिय स्थान हैं, वणिक अर्थात् व्यपारीक स्वभाव होने से ये इसकी प्रकृति हैं इसके जातक भी ऐसे ही हैं। विचारशीलता और राजनितिक चातुर्य इसके शुद्र वर्ण होने से हैं और इस राशि के जातक इसके लिये छोटे से छोटा कार्य करने से नही हिचकिचाते और अपने राजनितिक चातुर्य और विचारशीलता से उन्नति की ओर अग्रसर रहते हैं ।

कालपुरूष की गणनानुसार यह राशि मनुष्य के नाभि स्थान में निवास करती हैं और बहुत पीडीत होने पर यॅही पर रोग भी उत्पन्न करती हैं, तथा बहुत शुभ प्रभाव में होने से हर तरह के सुख सौन्दर्य और विलासिता के साधन उपलब्ध करवाती हैं। इसके लाभ के लिये आपकी कुण्डली में शनी का बलवान होना आवश्यक हैं, आप ध्यान से देखे कि आपकी कुण्डली में अगर सूर्य, वृषभ, मिथुन, कन्या, तुला, मकर और कुम्भ राशि में से किसी ऐक राशि में हो तो आप शनी रत्न नीलम धारण करें, ये रत्न आपकी सफलता कों निश्चित करेगा ।

वृश्चिक --- स्वार्थ और अंसतोष से ओत प्रोत वृश्चिक राशि अंतत रुप में सृष्टि के ज्ञान को प्राप्त कर लेती हैं और मोक्ष को प्राप्त होती हैं । अतिगूढ़ रहस्यों से भरी ये राशि जीवन के द्वितिय भाग में सृष्टि के रहस्यों को प्रकट करती हैं । बहरहाल इससे पहले इसके जातक अगर चेत जायें और अपने, स्वार्थ, असंतोष और भौतिक सुखो की चाहत पर नियंत्रण रख सके तो स्वास्थ को बचाने में सफल हो सकते हैं । अन्यथा जीवन के द्वितिय भाग में इस राशि के लोग खराब स्वास्थ से जूझते रहते हैं ।

वृश्चिक राशि, यह मंगल ग्रह की बहु उद्देशीय राशि है, इस राशि का चिन्ह बिच्छु ही इस राशि के सवभाव को प्रकट करने में समर्थ है । इस राशि के जातक पहले बहुत आकर्षक लगते हैं परन्तु बाद में अपने वचन का पालन ना करने की वजह से अनाकर्षक हो जाते हैं परन्तु ये स्वभाव से बहुत दृढप्रतिज्ञ और दंभी होते हैं ।

जिस तरह बिच्छु बिल में रहता हैं उसी तरह वृश्चिक राशि के जातक स्वंय को रहस्य में रखना पंसद करते हैं, परन्तु इनकी वाणी बहुत निर्मल और स्पष्ट होती हैं, यह राशि स्त्री जाति की होने से स्त्री जातकों को अपने प्रभाव से विशेष प्रभावी बनाती हैं, जल तत्व की राशि होने से यह राशि अपने जातकों को वन, गुफा और जल स्थानों की सैर करने के लिये प्रेरित करती है ।

वृश्चिक राशि के जातक खाने के मामले में बहुत मशहुर होते हैं । मसालेदार खाना और विभिन्न स्वादों की ईन्हे ललक सी रहती हैं । खाने के ये लोग इतने शौकीन होते हैं कि एक बार अगर किसी विशेष खाने के लिये मन बना लिया तो बस फिर उसे खाये बिगैर ईन्हे मजा ही नही आता हैं । फिर वो शाकाहारी अथवा मांसाहारी हो ये उसका स्वाद लिये बिगैर चैन से नही बैठते हैं ।

राशि स्वामी मंगल के प्रभाव के कारण ये लोग गरमागरम खाने के इतने शौकीन होते हैं कि खाने के बाद मीठा खाना भी अगर ईन्हे गरम मिले तो ये बहुत प्रसन्न होते हैं । हालाकि इसी वजह से ये पित रोग से प्रभावित हो जाते हैं और कभी कभी ऑपरेशन की नौबत तक आ जाती हैं ।

बहरहाल ये लोग अगर पेट का ध्यान रखे तो पथरी, अमाशय और आंतरिक टूटफूट से बच सकते हैं । पित की समस्या के कार ये लोग अंत में पेट के अल्सर से पीड़ीत हो जाते हैं ।

इस राशि के लोग इंजिनियर की तरह कार्य करके कई तरह के आधुनिक बदलाव तो ला सकते हैं परन्तु अकांउट के प्रति ये जरा कम संवेदनशील होते हैं, इसलिये पुँजी और धन कों ये बेतरतीबी से व्यय करते हैं, परन्तु फिर भी धन इन पर कृपालू बना रहता हैं और ईन्हे धन संबंधी परेशानी कम ही होती हैं, ब्राहमण वर्ण की राशि होने से इस राशि के जातक बहुत स्वाभिमानी होते हैं और इनके लक्ष्य उँचे होते हैं, कालपुरूष की गणनानुसार यह राशि लिंग और गुदा स्थान में निवास करती हैं और जब बलवान होती हैं तो यौनसुख का भरपुर आंनद देती अन्यथा कम देती हैं परन्तु यौन सुख की लालसा इनमें बढ़ी चढ़ी रहती हैं ।

स्थिर संज्ञक राशि होने से इस राशि के जातकों कों स्वभावगत रूप से बदलना मुश्किल होता हैं ये अपने विचारों और लक्ष्यों कों अपने अनुरूप बनाने का प्रयत्न करते हैं, किसी और के अनुरूप ये स्वंय को नही ढालते अगर वृश्चिक राशि के जातक धन और अपनी उच्चअभिलाषाओं कों पुर्ण करने में स्वंय कों निर्बल पाते हो तो वे ध्यान से देखे कि उनकी कुण्डली में सूर्य, मेष कर्क, सिंह, धनु और मीन राशि में से किसी ऐक में हो तो वे गुरू रत्न पुखराज धारण करें, ये रत्न उनकी सफलता कों निश्चित करने में सहायता प्रदान करेगा ।

मेरा अनुभव :- चन्द्र राशि अथवा जन्म राशि, जीवन के उतार-चढ़ाव और उँच-नीच का संकेत करती हैं । राशि स्वामी और राशि पर ग्रहों की दृष्टि आपको एक औसतन संकेत देती हैं कि आप किस प्रकार के फल पायेगें । परन्तु अगर आप राशि के चन्द्र-नक्षत्र का भी अध्यन करें तो आपको अपने गुण विषेश का पता चलेगा । साधारणयता पापग्रहों के नक्षत्र कठोर परिश्रम से उन्नति की राह दिखलाते हैं जबकि शुभग्रहों के नक्षत्र सहज ही उन्नति की राह पर चलायमान कर देते हैं । बहरहाल ये बात अपनी जगह हैं कि जिस राशि क्षेत्र में आपका नक्षत्र पड़ता हैं उसी के अनुसार आपका गुण विषेश विकसित होता चला जायेगा । सफलता और असफलता का अनुपात कुण्डली के बल और स्तर से तय होगा । परन्तु नक्षत्र का चरण आपकी राशि का नवांश होगा जोकि आपके कर्मयोग के फल को निश्चित करेगा ।

धनु --- धनु राशि मुक्ति की खोज में सहायता करने वाली राशि हैं । इसके जातक आवश्यक रुप से प्रसन्न और संतोषी नही होते हैं क्योकि असल मुद्दा तो प्रसन्नता और सन्तोष हैं ही नही, असल मुद्दा तो मुक्ति हैं । अंतर्मन के निर्देशों का पालन, प्रकृति के अनुसरण की ईच्छा और ज्ञान प्राप्त करने की उत्कंठ अभिलाषा के कारण इनका जीवन धनुष की प्रत्यंचा के समान तनावपुर्ण रहता हैं । धनु राशि के जातक एसे अर्जुन की तरह होते हैं जो सदा किसी श्रीकृष्ण की तलाश में रहते हैं और चाहते हैं कि उनके जीवन के द्वंद का अंत हो और उनकी चेतना का विकास हो जो उनके जीवन में अभिव्यक्त हैं ।

धनु राशि, गुरू ग्रह की मूल त्रिकोण राशि धनु पुर्णतं परोपकरीता की राशि है। ज्ञान और रचनात्मक कार्य करने वाली यह राशि हर लिहाज से श्रेष्ठ राशि हैं इसमें गुरू के ज्ञान के अलावा शक्ति संचालन का क्षत्रियता से भरा उर्वरक मस्तिष्क भी होता हैं ।

इसके जातक अपने अधिकारों की रक्षा के लिये अपने अंतिम प्रयास तक जुझते हैं। पुरूष जाति, क्षत्रिय वर्ण तथा क्रूर स्वभाव होने से यह राशि पुर्णत पुरूष प्रधान हैं और सभी पुरूषेाचित गुण इसमें हैं। इसकी विशेषता ये भी हैं कि जब इस राशि के जातक अपने अधिकारों की रक्षा के लिये जुझते हैं तो ये दूसरो के अधिकारों के प्रति भी सचेत रहते हैं और किसी अधिकार हनन नही करते ऐसे में ये बहुत दयालूता दिखाते हैं और जो भी बन पडे करते हैं ।

यह राशि भी द्विस्वभाव रखने वाली राशि हैं। इसके जातक जब अधिकारों के लिये जुझते हैं तब इनके जैसा कोइ क्षत्रिय नही होता परन्तु जब ये शॉत होते हैं, तो इनके जैसा कोई धर्मपरायण और ज्ञानी नही होता और यॅही इनका द्विस्वभावगत होना बहुत सार्थक होता है।

वृश्चिक राशि के ठीक विपरित यह राशि वचन से मुकरने वालों से बहुत द्वेष भाव रखती हैं। कालपुरूष की गणनानुसार यह राशि मनुष्य की जघॉ स्थान में निवास करती हैं । जब यह निर्बल होती हैं तब मनुष्य की जघॉए पीडादायक हो जाती हैं।

धनु राशि वाले जातक भी खाने के शौकीन होते हैं और खूब पारखी किस्म के होते हैं । एसे लोग जो खाने में विभिन्नता चाहते हैं अक्सर इनके साथ खाने की टेबल पर देखे जा सकते हैं । खाने के बाद मीठा खाना इनकी असदत सी होती हैं । इसका कारण शायद इनकी राशि का स्वामी गुरु हैं जो कि विप्र वर्ण का होने से मीठे को पसंद करने वाला होता हैं ।

बहरहाल धनु राशि वाले जातक पीने के पानी का ध्यान रखे और जंहा तक हो सके साफ सुथरा जल पीयें और शरीर में इसकी पर्याप्त मात्रा का भी ध्यान रखें ।

राशि स्वामी गुरु लीवर को शक्ति देता हैं एसे में अगर धनु राशि के जातक शराब का सेवन करेगें तो अंत में उन्हे लीवर की खराबी से जूझना ही पड़ेगा । शराब की आदत पड़ जाने से धनु राशि के जातक शराब का सेवन बहुत मजे से करने लगते हैं ।

उचित मात्रा में पानी पीना और मेहनत से उसे पसीने के रूप में निकालना इनके उत्तम स्वास्थ की नाशानी मानी जा सकती हैं । अगर ये लोग मांसाहारी ना हो और फल्लियॉ तथा सोया फूड लेने का प्रयास करें तो भी इनके स्वास्थ पर बुरा प्रभाव नही पड़ेगा ।

आप ध्यान से देखे कि आपकी कुण्डली में सूर्य, मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक अथवा मीन राशि में से किसी ऐक राशि में हो तो आप सूर्य रत्न माणिक धारण करे, सूर्य धर्म का देवता हैं और धनु राशि धर्म गुरू की राशि , सूर्य रत्न माणिक आपकी सफलता को निश्चित करने में आपकी सहायता करेगा ।

मेरा अनुभव :- राशि स्वामी अगर बलवान हो तो व्यक्ति आसपास के क्षेत्र को अथवा अपने से जुड़े लोगों को खूब जानता-पहचानता हैं । अगर नक्षत्र स्वामी बलवान हो तो व्यक्ति अपने गुण को खूब जानता-पहचानता हैं और अपने गुण की वजह से जाना जाता हैं । और अगर राशि का नवांश स्वामी बलवान हो तो व्यक्ति की फल पर दृष्टि रहती हैं और उसे फल मिल भी जाता हैं । अगर तीनों ही बलवान हो तो व्यक्ति गुणी और बुध्दीमान के रुप में जाना जाता हैं और प्रतिष्ठा पाता हैं । तीनों में से कोई दो अथवा कोई एक बलवान हो तो एसे में विद्वान अनुपात और विवेक से निर्णय करें । भाग्य, सफलता और असफलता का अलग से विश्लेषण होगा, हम यंहा केवल राशि की बात कर रहे हैं ।

मकर --- अध्यात्मिक संर्घष की प्रतिक मकर राशि के जातक अक्सर युक्तिसंगत कार्यो में उलझे रहते हैं । हालाकि कई बार इनके तर्क ईन्हे ही धोखा दे देते हैं । वास्तविकता भिन्न होने पर भी कई बार ये लोग स्वंय को स्थिर, विश्वसनीय और निष्कपट समझते हैं हालाकि इन आदर्शो से ये पयाप्त दूरी पर होते हैं । भावनात्मक अस्थिरता और असाधारण लोगो की संगति इनके दुख को बढ़ाने वाली होती हैं हालाकि ये एसा समझते नही हैं । इनके मित्र, जीवनसाथी और सहयोगी ईन्हे विश्वसनीय नही समझते हैं । इनकी अपार क्षमता और तीक्ष्ण बुध्दी ईन्हे वातावरण को समझने में और स्वंय को वैसा ढालने में सहयता करती हैं ।

मकर राशि, राशिचक्र में पडने वाली शनी की पहली राशि हैं, शनी को ग्रह संसद में सेवक की पदवी प्राप्त है इसलिये यह शनी की राशि सेवाभाव से परिपूर्ण हैं । इसके जातक सौम्य स्वभाव के सेवाभावी होते हैं, स्त्री जाति की यह राशि जब किसी स्त्री जातक की होती हैं तो उसे और सेवाभावी बनाती हैं तथा सुन्दर भी, इसलिये कि एक स्त्री का सेवाभावी होना उसकी सुन्दरता को और बढाता है ।

सौम्य होना स्त्री का गुण है, तथा उच्चाभिलाषी होना सेवक का और ये दोनो गुण इस राशि में होते हैं इसके जातक भी एसे ही होते हैं अर्थात् सेवा भी बहुत करते हैं और अपनी महात्कॉक्षाओं के लिये यश और अपयश के भागी भी होते हैं । अपयश के भागी इसलिये बनते हैं कि इनका अपनी जिव्हा पर नियंत्रण नही होता अर्थात् ये बोलते बहुत हैं, हालाकि कुण्डली के योग इसका अपवाद हो सकते हैं परन्तु साधारणयता देखा गया हैं कि मकर राशि के जातक बहुत बोलते हैं और अपनी भावनाओं कों छुपा नही पाते, इससे कभी कभी ये अपयश के भागी बनते हैं । परन्तु कर्तव्य परायणता का पाठ जो ये दे सकते हैं वैसा किसी अन्य राशि में नही मिल सकेगा ।

शनी की राशि मकर के जातक बढ़ती उम्र के साथ उत्तम स्वास्थ के मालिक बन जाते हैं । खाने के मामले में ये लोग बस एक ही बात चाहते हैं कि खाना स्वादिष्ट होना चाहिये । हालाकि ये शाकाहारी और मासांहारी दोनो ही हो सकते हैं परन्तु शर्त वही हैं कि खाने के दौरान साफ सफाई और सलीका आवश्यक हैं । मकर राशि के जातकों का शरीर जैविक गड़बड़ियों का शरीर होता हैं । मसलन फूड प्वांजन हो जाना इनके लिये साधारण सी बात हैं । इसलिये ईन्हे ध्यान रखना चाहिये कि पौष्टिक खाना ही इनके लिये स्वास्थ वर्धक सिध्द होगा । बहरहाल इन लोगों के लिये खाने का शेडयूल बनाना मुश्किल सी बात हैं इसलिये कि शानदार और सलीकेदार जगह पर ये कुछ भी खा लेना पसंद करते हैं । हड्डियों और रक्त की कमी का अगर ये लोग ध्यान रख सकें तो इनका स्वास्थ उत्तम रह सकता हैं ।

कालपुरूष की गणनानुसार यह राशि मनुष्य के घुटनो में निवास करती हैं और वात प्रकृति की होने से जब निर्बल होती हैं तो घुटनो के दर्द से पीडा देती हैं यह रात्रि बली राशि हैं, अर्थात इसके जातक रात्रि के समय अधिक सक्रिय और रचनात्मक हो सकते हैं ।

शायद सेवक का यही प्रारब्ध होता हैं कि दिनभर सेवा के बाद रात्रि का ही समय उसके पास होता हैं कि वो अपने लिये सक्रिय हो अथवा कोई रचनात्मक कार्य कर सके बहरहाल ये तो अंलकारिक बाते हैं जो हमें राशि के प्रभाव को समझने में सहायता करती हैं। अन्यथा मंगल इस राशि में उच्च का हो जाता हैं अर्थात मंगल जैसे क्षत्रिय ग्रह को इस राशि में अपना सम्पूर्ण प्रभाव दिखाने के लिये इस राशि की सहायता की आवश्यकता होती हैं यह राशि शायद यह सिखाती हैं कि एक क्षत्रिय का ज्ञानी और क्षत्रिय होने के बाद सेवाभावी होना ही उसका चरम हैं ।

मेरा अनुभव :- राशि अगर लग्न में पड़ जाये तो शरीर को अपना प्रभाव देती हैं और व्यक्ति का शरीर राशि के स्वभावानुसार दिखाई देता हैं । राशि अगर चन्द्र राशि बन जाये तो व्यक्ति राशि अनुसार दुनियाँदारी और व्यवहारिकता प्रकट करता हैं लेकिन अगर राशि सूर्य राशि बन जाये तो व्यक्ति के मूल गुणधर्म राशि के स्वभावानुसार हो जायेगें । जैसे अगर मकर राशि लग्न में पड़ जाये तो व्यक्ति लंबा-पतला, साँवलां और सेवकों जैसे हावभाव वाला होगा । क्योंकि राशि स्वामी शनि एसा हैं । लग्न पर विभिन्न ग्रहों की दृष्टि इसमें बदलाव ला सकती हैं । मकर राशि अगर चन्द्र राशि बन जाये तो उपर हम इस विषय में बता आयें हैं । परन्तु मकर राशि अगर सूर्य राशि बन जाये तो व्यक्ति के जन्म समय पर मेहनती लोगों का जमघट होता हैं । अर्थात उसके जन्मसमय पर कई मेहनती लोग उपस्थित होते हैं अथवा उसका पिता ही नौकरी करने वाला अथवा साँवलें रंग वाला होता हैं । क्योंकि राशि स्वामी शनि एसा होता हैं तथा पिता और जन्म का समय व्यक्ति के मूल तत्वों में गिने जायेंगे । जातक की हड्डियां और दिल कमजोर होते हैं क्योंकि सूर्य इस राशि पर आकर निर्बल हो जाता हैं और अपने तत्वों की भरपाई नही कर पाता हैं तथा हड्डियां और दिल व्यक्ति के मूल माने जाते हैं इसी पर व्यक्ति का जीवन चक्र निर्भर हैं । बहरहाल विभिन्न ग्रहों की युति और दृष्टि इसमें बदलाव ला सकते हैं ।

कुम्भ --- विधाता ने कुम्भ राशि के जातको के लिये कर्मो का लेखा जोखा इस प्रकार लिखा हैं कि जब इसके झोंके चलते हैं तो जातक अपने सहयोगियों और स्वयं अपने आपमें नया दृष्टिकोण एंव नया जीवनपथ निर्धारित करता नजर आता हैं । कुम्भ राशि का जातक ना तो भाग्यशाली होता हैं और ना ही अभाग्यशाली होता हैं । इसके जीवनकी प्रत्येक घटना उसे किसी विशेष दिशा एंव किसी विशेष जीवनशैली में ढालने के लिये उसे प्रेरित करती हैं ।

कुम्भ राशि में जन्म लेने वाले जातक अपने पूर्व जन्मो के फलस्वरुप निरंतर सन्यास की ओर अग्रसर रहते हैं । इसकी दृष्टि सदा ही अपने उदगम पर लगी होती हैं ताकि ये अपने जीवन का लक्ष्य समझ सके । राशि स्वामी शनी मोह जनित दुख और पीड़ा तथा नक्षत्रों के स्वामी मंगल, राहु और बृहस्पती इसे तेज, अक्षुण्ता और ज्ञान उपलब्ध करवाते हैं और अंतत ये निवृति की ओर मुड़ जाते हैं ।

इस राशि में बहुत ही महत्वपुर्ण लोग जन्म लेते हैं जो जनसाधारण में अपनी महत्वपुर्ण छाप छोड़ते हैं । ये लोग निश्चित रुप से अपना लक्ष्य हासिल करते हैं, भले ही इसमें समय लगे ।

कुम्भ राशि, राशिचक्र में शनी की लगातार दुसरी राशि, सभी ग्रहों में शनी ही ऐसा ग्रह हैं जिसकी राशियॉ लगातार पडती हैं। घट के चिन्ह वाली ये राशि शनी की मूल त्रिकोण राशि हैं इसके जातक धर्मवीर, विचारशील, अन्वेषक विचारधारा वाले तथा शिल्प चातुर्य से परिपुर्ण होते हैं ।

कुम्भराशि के जातक घट अथवा घडे के समान होते हैं, मुॅह छोटा एवं पेट बडा अर्थात् इनके अंदर बहुत विचार मंथन होता हैं परन्तु इनके कम बोलने से इनके स्वभाव का पता कम ही चलता। आजकल के तीव्रगामी जीवन में कुम्भ राशि के जातक ही अधिक जन्म लेते हैं क्योंकि सांसारिक जीवन की सकल पुॅजी अर्थात् ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान और अविष्कार की जननी यह राशि आजकल के जीवन के रखरखाव की संचालक हैं।

कुम्भ राशि के जातक खाने को लेकर कोई दिखावा नही करते हैं । इनका कुछ भी निश्चित नही होता हैं और जिस समय जो कुछ मिल जाये वही इनके लिये अहमियत रखने वाला होता हैं । खाना इनके लिये महत्वपुर्ण होता हैं । खाने के लिये इनके कोई नियम भी नही होते हैं और एसा देखा गया हैं कि नाश्तें के समय भरपेट दोपहर खाना खा लेते हैं और कई बार दोपहर अथवा रात का खाना भी बहुत कम नाश्ते जैसा ले लेते हैं ।

ईन्हे मीठी चीजों परहेज रखना चाहिये परन्तु ईन्हे मीठा खाना ही ज्यादा पंसद होता हैं । हल्का सलाद खाना ईन्हे बहुत पंसद हैं साथ साथ अगर ये फल भी अपने खाने में शामिल कर ले तो इनके स्वास्थ पर इसका बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ेगा ।

शनी की राशि होने के कारण इनके नर्व सिस्टम का इनके जीवन में बहुत सक्रिय रोल रहता हैं । एसे में अगर ये शराब के सेवन से बचें तो अच्छा होगा अन्यथा इनके नर्व सिस्टम पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा । कुम्भ राशि के जातक दिन के समय अधिक सक्रिय होते हैं, और अपने धर्म पर अटल रहने वाले ये जातक किसी भी कार्य को छोटा और हीन नही समझते हैं, इनकी अन्वेषक विचारधारा और शिल्प चातुर्य छोटे से छोटे कार्य में विशेषता भर देती हैं। ये उष्ण स्वाभाव के होने से तुरंत प्रतिक्रिया नही देते परन्तु इनका पुरूषार्थ इनके प्रत्येक कार्य से सहज ही झलकता है।

अपने स्थिर स्वभाव के कारण ईन्हे इनके लक्ष्य से हटाना मुश्किल होता हैं और बेवजह अपमान के ये घोर विरोधी होते हैं तथा अपमान का प्रतिशोध ये हर हाल में लेते हैं यह राशि सूर्य जैसे प्रबल प्रतापी और तेजस्वी ग्रह कों भी शॉत कर देती हैं जोकि कोई और राशि नही कर सकती । मेरा अनुभव :- सुदर्शन चक्र सिध्दांत कुण्डली देखने का एसा सरल सिध्दांत हैं जिसमें तीनों लग्नों को एक साथ भी देखा जा सकता हैं और पृथक-पृथक भी देखा जा सकता हैं । तीन लग्न अर्थात जन्म-लग्न, सूर्य-लग्न और चन्द्र-लग्न अर्थात राशि । जन्म-लग्न, शरीर रुपी वट-वृक्ष हैं और सूर्य-लग्न इस वृक्ष का मूल हैं अथवा इसकी जड़ें हैं । तथा चन्द्र-लग्न अथवा राशि इसकी ऊपजाउ शक्ति अथवा इसका निखार हैं । अगर जन्म-लग्न बलवान ना हो तो ऊपजाउ शक्ति से ऊपजा निखार और फसल शरीर के लिये भोग्य सिध्द नही होगें । इसलिये विद्वानजन कुण्डली को जन्म-लग्न से ही देखना पंसद करते हैं । इसलिये कि भोग्य तत्व ही बली नही हैं तो जीवन के व्यापार से ऊपजा निखार और फसल किस काम का होगा । जन्म-लग्न, जीवन हैं और स्वास्थ हैं । इसके बली होने से ही जीवन-गाथा आगे बढ़ती हैं । कई बार कई लोगों को राशिफल सही नही लगता हैं । क्योंकि उनके जन्म-लग्न में उनके राशिफल के निखार अथवा फसल को ग्रहण करने वाले तत्व नही हैं । जन्म-लग्न रुपी वटवृक्ष में कई शाखायें और उप-शाखायें होती हैं और कई बार इनके तत्व राशिफल से तालमेल नही बना पाते हैं ।

मीन --- मीन राशि राशि चक्र की अंतिम राशि हैं और ये एक ऐसे अंत का संकेत करती हैं जंहा इसके जातक अपनी चेतना को सर्वव्यापी बनाने के लिये बेचैन और असन्तुष्ट से बने रहते हैं । इसका तात्पर्य ये नही हैं कि ये सदा दुखी रहते हैं बल्कि सभी कुछ होते हुऐ भी कुछ अनिर्णित की कमी सी उन्हे मेहसूस होती रहती हैं ।

ये लोग इतिहास, पुराण, धार्मिक ग्रन्थ और श्रेष्ठतम कलाकृतियों में विशेष रुचि रखते हैं । धार्मिक प्रतिपालन परमात्मा के भय से करते हैं । हालाकि मीन राशि के लोग धार्मिक, पुण्यात्मा, रूढ़िवादी और दैनिक जीवन के आंनद से रहित होते हैं ।

कालपुरुष के पैरों में स्थि ये राशि एक विशेष कायीार अथवा उतरदायित्व को सभालने का संकेत करती हैं । ऐसे ही मीन राशि के जातक जीपवन में विशेष कार्यभार और उतरदायित्व को निभाते दिखते हैं । मीन राशि वालों की सबसे बड़ी परिक्षा इनके स्त्री प्रलोभन, मादक द्रव्यों का सेवन और सांसारिक सुखों के लालच से होती हैं । अगर ये जातक इससे बचने के मार्ग पा लें तो फिर जीवन इनके लिये विशेष प्रकार का हो जाता हैं और ये अपनी चेतना को सर्वव्यापी चेतना में बदल देते हैं ।

मीन राशि, राशिचक्र में यह गुरू की द्वितिय और राशिचक्र की अंतिम राशि हैं, गुरू का पुर्ण प्रभाव इसमें दिखाई देता हैं, इसके जातक, दानशील, दयालू और परोपकार की भावना से भरे होते हैं, जल तत्व की ये राशि कफ प्रकृति की होती हैं, इसके जातक जीवन के उतार चढाव से बहुत प्रभावित होते हैं ।

इसका उदाहरण हमें इसके चिन्ह को देखने से भी मिल सकता हैं, इसका चिन्ह मीन हैं अर्थात् मछली, जिस तरह मछली पानी की छोटी बडी लहरों के उतार चढाव के साथ अपनी यात्रा सतत् बनाये रखती हैं उसी तरह मीन राशि के जातक भी जीवन के उतार चढाव से जीवन के पाठ पढते हैं, फिर भी इस राशि का स्वामी ईन्हे अपने गुरूत्व और ज्ञान से भावनात्मक स्नेह और प्रतिबध्दता के प्रति सचेत रखता हैं और ये मानवीय चेतना से जागृत और कर्म तथा आर्दश के उदाहरण स्थापित करते हुए विकास की दौड में गति बनाये रखते हैं ।

मीन राशि के लोग बहुत नाजुक किस्म के होते हैं अथवा एसा कहें कि इनकी वाचन शक्ति बहुत नाजुक होती हैं तो सही होगा । ये फूड प्वायजिंग से बहुत जल्द प्रभावित होते हैं । अगर कम चर्बी, कम मीठा और प्रोटीन वाला खाना इनके लिये बहुत उम्दा हो सकता हैं ।

शराब की लत ईन्हे बहुत जल्दी लग जाती हैं । शायद मीन राशि जल राशि होने से ईन्हे शराब की ओर आकर्षित करती हैं । मछली खाना भी ईन्हे पसंद होता हैं । हालाकि मछली, मसालेदार और भूने खने ईन्हे नही खाने चाहिये । मीन राशि वालों को संगीत से बेहद लगाव होता हैं और ये कभी कभी इस लगाव के चलते सबकुछ भूल जाते हैं ।

शारीरिक स्वास्थ के लिहाज से इनके लिये लोह तत्व बहुत आवश्यक होता हैं । ईन्हे इसी बात का सबसे अधिक ध्यान रखना चाहिये अन्यथा ये लोग श्वसन रोग से पीड़ीत होते हैं ।

मेरा अनुभव :- एसा हो सकता हैं कि आपके जीवन में राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी और राशि नवांश स्वामी की महादशायें चले ही नही । इसलिये कि पाँच अथवा छह दशाओं से अधिक बहुत कम लोगों के जीवन में दशायें चलती हैं । तब एसा हो सकता हैं कि जैसी आपको दुनियाँदारी और व्यवहारिकता की समझ हैं वैसा कोई कार्य आप जीवन में करें ही नही और बली महादशाओं के ग्रहों के प्रभाव से उनके क्षेत्र में कार्य करते रहे और जीवन पुर्ण हो जायें । तब शायद आप ये कहें कि -- जैसा मैंने सोचा था वैसा मेरे जीवन में हुआ ही नही । याद रखें, पुर्व जन्मों के कर्मफल और ईश्वर की मर्जी सर्वोपरि हैं आप उसका हिस्सा हैं और उससे अलग नही हो सकते हैं ।